पढ़ना और खुद को गढ़ना

– प्रतिभा सक्सेना

कोरोना के दौरान सबने कुछ न कुछ नया सीखा है। इस दौरान बने सृजन समूहों से जुड़कर मैंने जाना कि कक्षा–कक्ष के वातावरण को किस प्रकार बनाना है कि बच्चे सरलता से सीख सकें।

लॉकडाउन से लेकर अब तक समय की यदि कोई अमूल्य धरोहर है मेरे पास तो वह है सृजन समूह से जुड़कर सीखे व संजोये हुए सुनहरे अनुभव जो विद्यालय खुलने पर निश्चित ही मेरे बहुत काम आयेंगे। सृजन समूह से जुड़ने तक यह पता नहीं था कि इस समूह से जुड़ना इतना फायदेमन्द होगा। मैंने पहली बार समझा कि शिक्षक के लिए पढ़ना कितना जरूरी है। पढ़ते तो पहले भी थे परंतु शिक्षक होने के नाते जिस समझ के साथ पढ़ना चाहिए वह समझ सृजन समूह से जुड़कर मिली। मैंने जाना कि कक्षा–कक्ष के वातावरण को किस प्रकार बनाना है कि बच्चे सरलता से सीख सकें। स्थायी ज्ञान प्राप्त कर सकें। पढ़ाई बच्चों को बोझ न लगे बल्कि उनके जीवन जैसे खेल एक मनोरंजन है वैसे ही पढ़ाई भी मनोरंजक लगने लगे। यदि व्यक्तिगत रूप से देखूं तो मैंने भी पढ़ने को समझकर आत्मसात करने का तरीका जाना। जैसे– पैटर्न, खोज, भ्रमण आदि। इन विधियों, बातों को ध्यान में रखकर कार्य करूंगी। मैंने बहुत सारे व सभी प्रकार के आलेख पढ़े। कृष्ण कुमार जी का लेख– 70 साल पुरानी एक शाम, पढ़ना और पढ़ाई आदि उनके सभी आलेख मुझे बहुत पसन्द हैं। वे इतनी सहजता से, अपने विचार, अपने अनुभव लिखते हैं कि बेमिसाल रहते हैं। कृष्ण कुमार जी के लेखों से मैंने सीखा कि मुझे अपने विद्यालय में ऐसा माहौल बनाना है जिसमें बच्चे पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकें भी रुचि के साथ पढ़ें। बच्चों को पुस्तकें टटोलने, खेलने, पुस्तकों में चित्रों का आनन्द लेने के पर्याप्त अवसर दूंगी।

दूसरा आलेख 'शेषागिरी राव जी का आलेख 'गणित का सौन्दर्य है। इस लेख को पढ़कर मैंने जाना कि बच्चों को सहजता से पूर्ण व स्थायी ज्ञान देने के लिए पहले मुझे स्वयं अपने विषय का गहरा ज्ञान करना है। नयी विधियां खोजनी हैं, गतिविधियां ढूंढ़नी है जिससे बच्चे मुझे व मेरी दी शिक्षा को भी हमेशा ही याद रखें। तीसरा आलेख जिसके बारे में बताये बिना नहीं रहा जा सकता वह है श्री केवलानन्द काण्डपाल जी का आलेख ''विद्यार्थियों में मूल्यों का बीजारोपण''। जिसको पढ़कर मैंने जाना कि मुझे मेरे विद्यालय में अपनी शिक्षण विधियों के माध्यम से गतिविधियों से क्रियाकलापों के द्वारा सवैंधानिक मूल्यों जैसे समानता भाईचारे को बढ़ावा देना है।

मैंने सीखा कि इन मूल्यों के बारे में मैं बच्चों के साथ चर्चा करूंगी तभी बच्चे समझ पायेंगे। श्री भीमराव अम्बेडकर जी का आलेख '26 जनवरी भी यही सिखाता है किशोर पंवार जी के लेख ''एक शाम पक्षियों के नाम'' को पढ़कर जाना कि एक शिक्षक कैसे आसपास के परिवेश को गहराई से देखता है। कृष्णकुमार जी ने भी कहा है कि हम हमारे आसपास के परिवेश में क्या है ये जानते नहीं हैं पर किताबों में बड़ी–बड़ी बातें पढ़ाते हैं, पढ़ते हैं। उनकी इस बात ने मुझ बहुत प्रभावित किया। मैंने इस लेख से सीख ली कि मुझे स्वयं को और अपने विद्यालय के बच्चों को प्रेरित करना है कि जो पक्षी स्कूल, घर के आसपास होते हैं उनके घोंसले कैसे है, वे कैसे इन्हें बनाते हैं? घोंसला कैसे टिका है आदि बातों को जानें। मैं बच्चों को हमेशा इसके लिए प्रेरित करुंगी मुझे 'टीएलएम बनाम Teaching aids' आलेख भी बहुत पसन्द आया जिसको पढ़कर समझ बनी कि जिन्हें हम टीएलएम कहते हैं वे तो वास्तव में Teaching aids हैं। टीएलएम वह होता है जिन्हें बच्चे छू सकें, करके देख सकें, कुछ सीख सकें। मैं बच्चों को ऐसा करने के अवसर प्रदान करूंगी व मैंने इस लेख से प्रेरित होकर कुछ नये टीएलएम बनाये भी हैं। बच्चों को गहराई से अवलोकन करना बहुत आवश्यक है। बच्चे यदि कुछ सीख नहीं पा रहे हैं तो मुझे कहां व कैसे अपने शिक्षण में बदलाव करना है। यह मैंने इस आलेख को पढ़कर सीखा। 'एक उत्साही शिक्षिका की डायरी' आलेख को पढ़कर मैंने समझा कि मुझे भी समुदाय का अपने विद्यालय से जुड़ाव और बढ़ाना है। तभी मैं अपने विद्यालय और समाज में थोड़ा परिवर्तन कर सकूंगी।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय गंगापुर पटिया रुद्रपुर ऊधमसिंह नगर में सहायक अध्यापिका हैं।)